कृष्णा

❑ कप्तान सिंह सोलंकी

अशिक्षित बहुसंख्या वाले गांव से स्कूल के बाहर रहे बच्चों को पढ़ाने के लिए शिक्षक के रूप में आगे आने वाली युवतियों में से कृष्णा एक उदाहरण है । स्वयंसेवी शिक्षक के रूप में कार्य करने की कृष्णा को मिली उत्प्रेरणा और प्रशिक्षण ने उसका व्यक्तित्वान्तरण तो किया ही, साथ ही उसकी 'आत्मछवि' में भी खासा सकारात्मक बदलाव किया ।

राजगढ़ (चूरू) विकास खण्ड में लोक जुम्बिश परियोजना के तहत चल रहे सहज शिक्षा कार्यक्रम के अन्तर्गत बालिका शिक्षण का काम महत्वपूर्ण कदम तो है ही, साथ ही यह कदम अपने विकास की ओर उन्मुख है । पूर्व में 'विमर्श' के अंक मार्च, 99 में प्रेमनारायण गुर्जर की रपट से यह स्पष्ट हो जाता है कि कितनी कठिनाइयों व चुनौतियों के बावजूद महिला शिक्षक यहां साहस व जीवट के साथ शिक्षण का काम कर रही हैं ।

मुझे इस इलाके में आए बहुत ही कम दिन हुए हैं । इतने कम दिनों में ही मैं यहां बच्चों के साथ काम करने वाली इन महिला शिक्षकों के कार्य और व्यवहार से बारीकी से रुबरू हुआ हूं और शिक्षिकाओं और बच्चों के साथ शिक्षण कार्य से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ भी हूं ।

शैक्षणिक बैठकों, केन्द्र अवलोकनों और समय समय पर हुई बातचीत से प्रत्येक महिला शिक्षक के काम, बच्चों के साथ काम करने की रुचि, दृष्टिकोण आदि से परिचित होने के अवसर मिलते रहते हैं ।

सहज शिक्षा कार्यक्रम की इन्हीं महिला शिक्षिकाओं में एक अनुदेशिका हैं कृष्णा जो लम्बी कद काठी के कारण सब में अलग से पहचानी जा सकती है। उम्र 31 वर्ष के लगभग, सन् 1985 की मैट्रिक पास हैं । दुबला शरीर लेकिन आंखे दूर तक देखने वाली। सादा ही कपड़े पहनती हैं सलवार कुर्ता । जल्दी-जल्दी हरियाणवी में बोलना और पूरे विवरण में बात कहना उनके स्वभाव में है । लेकिन किसी बात पर गुस्सा आना स्वभाव के विपरीत है।

पारिवारिक परिस्थितियों खेतीबाड़ी आदि के धन्धों के कारण वे अपनी आगे की पढ़ने की ललक को पूरी न कर पाईं । लेकिन समय निकालकर वे छोटी मोटी कहानी की किताबें आदि घर में पढ़ ही लेती ।

जब 9-14 वर्ष के गांव के बालक/बालिकाओं को पढ़ाने की बात गांव में आई तो कृष्णा इस काम के लिए चुनी गईं । दिगन्तर (जयपुर) में 40 दिन के प्रशिक्षण के बाद इन्होंने अपनी सजह शाला 2 नवम्बर, 1996 को गांव में खोली । तब से अब तक ये बच्चों के साथ मेहनत व लगन से लगी हुई है । मेहनत व अपना काम जिम्मेदारीपूर्वक निर्वाह करना, कृष्णा के स्वभाव में है। कृष्णा ने बताया कि जब वह दिगन्तर शिक्षक-प्रशिक्षण के लिए गई तब उनकी गोद में डेढ़ माह की एक बच्ची थी । चर्चाओं और प्रशिक्षण के मुद्दों में इतनी गम्भीर रहीं कि बच्ची का कोई ख्याल नहीं रहता । उसे पता नहीं रहता कि बच्ची को दूध भी पिलाना है। इस कारण आंचल का दूध ही सूख गया । कृष्णा को लगता था कि वह प्रशिक्षण कक्ष से बाहर चली गई तो न जाने उसके जाने से क्या क्या छूट जायेगा ।

अनुदेशिका का गांव (गागडवास) सड़क मार्ग से लगभग 4-5 किलोमीटर रेत के टीवों में है । वह नियत समय पर अनुदेशिका मासिक/पाक्षिक बैठकों में आती है। पूरा काम तैयार, चाहे योजना डायरी देखिए या रिकार्डिंग की । बच्चों की कापी किताबें भी साथ लाती है कि वे कैसा सीख रहे हैं । कृष्णा थोड़े से संवाद में लगभग 8-10 बार हां जी, अच्छा जी, कह देती है । जीकारे का संबोधन उनके बात करने के ढंग में आ ही जाता है ।

यह अनुदेशिका कभी झूंठ का सहारा नहीं लेती । बात को विस्तार से स्पष्ट कह देती है । सहयोग के लिए तत्पर रहती है ।

अनुदेशिका की सहज शाला में शुरू से अब तक काफी बच्चे, बड़ी उमर की बालिकाएं आई हैं । पांच बालिका जब पांचवी के स्तर पर पहुंची तो उसकी परीक्षा अनौपचारिक केन्द्र से दिला दी गई । श्रेय किसी और को मिला । सुमन (एक बालिका) को अच्छी तैयारी के साथ मेहनत करवाई, वह मामा के यहां चली गई । कई बड़ी बालिकाएं ससुराल चली गई या घरेलू काम से रुक

गई । आ चाहती है कोई बालिका शाला से हटे नहीं । इसके लिए वह अभिभावक से नियमित सम्पर्क बनाए रखती है । बच्चों से भी मिलती है । गांव की महिलाएं कृष्णा के बारे में कहती हैं, ''बच्चा खातिर हाडे बोडी सै'' (बच्चों के लिए भागी फिरती है।)।

एक दिन जब मैं अनुदेशिका के यहां सहज शाला अवलोकन के लिए पहुंचा तो सभी बच्चे ध्यानपूर्वक बैठकर अपने काम में लगे हुए थे । लेकिन अनुदेशिका वहां नहीं थी । बच्चों से पूछा, 'तुम्हारी मास्टरनी कहां है?' बच्चों ने कहा, 'बच्चों को बुलाने घर गई है।' थोड़ी देर बाद वह वहां आई तो चेहरे पर चिन्ता के भाव थे । कारण पूछा तो बताया कि एक बालिका घास लेने गयी है और बालक बकरी चराने गया है । कविता (एक बालिका) छुट्टी पर है । इस इलाके में फसल कटाई के समय बच्चों की उपस्थिति काफी प्रभावित होती है । सहज शाला में पढ़ने वाली लगभग सभी बालिकाएं बड़ी उम्र की हैं इसलिए कृषि एवं घर के काम में भागीदारी कर हाथ बंटाती है । यह अनुदेशिका यहां खेत तक जाकर बच्चों को शाला में लाने का प्रयत्न करती है ।

खुले मन से बच्चों के साथ काम का ही परिणाम है कि इस साल छह बच्चे पांचवी के स्तर की क्षमताएं अर्जित कर कृष्णा के केन्द्र से परीक्षा में बैठे हैं। बच्चे चाहें कभी भी अपनी समस्या लेकर शिक्षिका के पास आएं वह उनकी मदद करने के लिए तत्पर रहती है । कृष्णा किसी भी महिला से किसी भी प्रकार की बात शुरू करे, उसका निष्कर्ष या अन्त बच्चों की पढ़ाई के बारे में होगा ।

गांव के लगभग सभी शिक्षित/अशिक्षित व्यक्ति कृष्णा के बारे में सकारात्मक सोच रखते हैं । वह बेझिझक सबसे बातचीत कर सकती है । कृष्णा का गांव में काफी सम्मान है ।

बालक सहज शाला से जुड़े रहें इस हेतु गांव वाले भी अनुदेशिका का सहयोग करते हैं । इससे लगता है बालक, शिक्षक समुदाय के संबंधों में समन्वयन ही शिक्षा कर्म में महत्वपूर्ण आधार है ।

शिक्षिका बच्चों के साथ काम से पहले अपनी योजना व पूर्व तैयारी को जरूरी समझती है । वह मानती है कि बच्चों को बताने से पहले हम खुद स्पष्ट हों । पढ़ाई से खुद की कमजोरी सामने आती है कि हम कितना जानते हैं । यह विचार इस विचार से मेल खाता है कि जो शिक्षक पढ़ता नहीं उसे पढ़ाने का भी कोई अधिकार नहीं है ।

शिक्षिका का मानना है शिक्षक को ऐसी कोई अडचन बच्चों के लिए खड़ी नहीं करनी चाहिए जिससे बच्चों की सीखने की ललक ही खत्म हो जाए । यह बात बिल्कुल सही है शिक्षक को एक संवेदनशील मार्गदर्शक होना चाहिए। उन्हें ऐसा सिखाएं कि अपने काम में उन्हें खुशी मिले ।

अनुदेशिका कहती है कि बच्चों के साथ रहकर मैंने उनसे बहुत कुछ सीखा है, जानकारी व समझ बढ़ी है । अनुभवों के बारे में पता चलता है। गांव में भी इज्जत बढ़ी है ।

यद्यपि इस काम में काफी कठिनाइयां भी आई और अब भी है । जितना काम है उसकी तुलना में मानदेय कम है । लोगों की सोच में बदलाव काफी वक्त के बाद आया । घर की व अपने बच्चों की भी जिम्मेदारी है । फिर भी मैं ने कभी हिम्मत नहीं हारी और ईमानदारी से काम किया ।

कृष्णा ऐसी क्यों है ? यह सवाल बार-बार मन में आया । मुझे लगता है कृष्णा की पारिवारिक पृष्ठभूमि से कुछ चीजें उसे विरासत में मिली हैं । पिताजी सेना में अफसर रहे हैं शायद उनके कर्मठ जीवन के संस्कार व प्रभाव उनके जीवन में हैं।

एक चीज यह भी लगती है कि प्रत्येक व्यक्ति में अलग अलग क्षमताएं व योग्यताएं हैं। कृष्णा में आत्म बोध व आत्म विकास या विस्तार का बोध है। यह उसे आत्म विश्वास भी देता है। व्यक्ति में ऐसी योग्यता या क्षमता व्यक्तिगत या चारित्रिक विकास में सहायक होती हैं ।

ऐसी योग्यताओं के द्वारा व्यक्ति अपने आत्मिक विकास के साथ साथ समाज में अपना बेहतर स्थान बनाने के लिए कुछ करने कोशिश करता है ।

मेरा यह सोचना भी है कि समाज में अकेली कृष्णा ही नहीं अन्य महिलाएं भी ऐसा उदाहरण बन सकती हैं । ◆